त्याम्लं

क्हादितग्रहम्। तत्पर्यायः। कायमानम् २। इति विकाखप्रेषः ॥ लगौकः ३। इति हमचन्द्रः॥ हणकूमाः, पुं, (हणस्य कूमा इव।) तुम्बी। इति

खगतेतु:, पुं, (हमेषु केतुध्येष इव।) वंग्रः। इति हारावली। १०८॥

लगकेतुकः, पुं, (लगकेतु + खार्चे कन्।) वंगः। इति राजनिषंग्टः॥

हणगोधा, स्त्री, (हणस्य गोधेव चुदलात्।) चित्रकोल:। क्रकलास:। इति मेदिनी। धे, 8६ ॥ त्याजनीता। इति केचित्॥

हबप्रश्चिः, स्त्री, (हबस्य प्रश्चिरिव प्रश्चियंस्य।) खर्गजीवन्ती। इति राजनिषयुटः॥

हणगाही, [न्] पुं. (हर्ण रहातीति। यह+ बिनि:।) नीलमबि:। इति राजनिधेयट:॥ मियाविश्रेष:। इति श्रव्दार्थंक लपतवः॥ कामुर-दाना इति भाषा। तत्पर्यायः। स्तापूरः २ लगमिया: ३। इति द्वारावली ॥

हरणनमा, [न्] जि, (हर्ण जम्मी भच्च यस्य। "जन्मा सुइरितल्यासीमेभ्यः।" ५।४।१२५। दित निपातनात् साधुः।) हयाभद्यकः। (हय-मिव जम्मो दन्तो यस्य।) ह्यावर्णदन्तयुक्तः। इति सिद्वान्तकौ सुदी।

ष्ट्रणता, स्त्री, धनु:। (त्यास्य भाव:। त्या+ भावे तल।) त्यालम्। इति मेहिनी। ते,

ह्याहुम:, पुं, (ह्याप्रधानी दुम:। ह्यामिन दुमी वा।) ताल:। गुवाक:। ताली। केतकी। खर्ज्रः। खर्ज्रौ। नारिकेतः। हिन्तातः। रवां निर्यासगुखाः। शीतलतम्। लघुलम्। मोइनलम्। बलकारिलम्। इदालम्। हणा-सन्तापनाभित्वच। इति राजनिर्धेष्टः॥

हणधान्यं, स्ती, (हणबहुलं धान्यम्।) धान्य-विशेषः। उड़िधान इति भाषा। तत्पर्यायः। नीवार: २। इत्यमर: ।२।६।२५॥

रुगध्वनः, पुं, (त्योधु ध्वन इव दीघेत्यात्।) वंग्रः। इत्यमरः।२।३।१६०॥

ल्खानिम्बः, पुं, (ल्लाकारी निम्बः।) नेपाल-निमः। इति राजनिर्घेग्टः॥

रुणपत्रिका, खी, (हणस्वेव पत्रमस्यस्याः। ठन् टाण्च।) इच्चदर्भा। इति राजनिर्धेग्टः॥

हणपत्री, खी, (हणमिव पत्रमखाः। डीष्।) गुखाभिनी। इति राजनिर्धेषः॥

हमपुष, की, (हमस पुष्पमिव।) हमकु-मम्। इति राजनिषेग्टः॥

हबपुच्यो, स्त्रो, (हबमिव पुच्यमस्या:। दीव्।) सिन्द्रपृष्यीवृत्तः। इति राजनिर्धेषः।

हमपूनी, स्ती, (हमस पून: संहतियेत्र। ततो गौरादिलात् डीष्। ल्यानिर्मितलादस्य तथा-लम्।) चथा। इति हारावली।१६६॥ चांच इति भाषा ।

इति हारावली। २१६॥

ल्यमत्कुणः, पुं, लयकः। इति विकाकश्चिः॥ जामिन् इति भाषा॥

हणराजः, पुं, (हणेडु राजते शोभते इति। राज + अप्। द्यानां राजा वा समासे टच्।) तालहत्तः। इत्यमरः। १। ५।१६८॥ (यथा, वार्यासप्तश्राम्। ५६०। जिल्लम्। "श्रीः श्रीपाचेन राज्यं हणराजेनाकाचात्वतो

कुचयोः सम्यक् सान्यात् गतौ घटश्वक्रवर्शितम्॥") नारिकेल:। इति राजनिर्घेग्ट:॥

हरावस्त्रजा, स्त्री, (हरारूपा वल्तजा।) वस्त्रजा। इति राजनिष्येष्टः॥

ल्यवीन:, पुं, (ल्यस्य वीनिमव वीनमस्य।) भ्यामाकः। इति रत्नमाला ॥

हणवीजोत्तमः, पुं, (हणवीजेव उत्तमः।) श्यामाकः। इति राजनिषंग्टः॥

हणभीतं, सी, (हणेषु भीतं भीतजन्।) कन्-यम्। गत्वलयम्। इति रतमाला॥

हवाग्रीता, स्त्री, (हवीष्ठ ग्रीता ग्रीतला।) जल-पिष्यली। इति राजनिर्घेत्टः॥

ल्याश्रामं, की, (लगेन श्राम्।) मिल्ला। केतकीफलम्। इति मेहिनी। ये, ११६॥ (एतद्गुणा यथा,--

"नीपं सभागेवं पीलु त्याश्र्यं विकङ्कतम्। प्राचीनामलकचेव दोवन्नद्गरहारि च॥"

इति चर्के समस्याने सप्तविधिरध्याये॥) ल्यरहिते, ति ॥

ल्याषट्पदः, पुं, (ल्याभिव षट् पदा यस्य।) वरोल:। इति हारावली। २१०॥ बोल्ता इति भाषा॥

हमसारा, स्त्री, (हमवत् सारो यखाः। चसा-रलात् तथालम्।) कदली। इति हारा-वली। १०५॥

हणसिंइ:, पुं, (हणेषु सिंइ इव तन्नाध्यकलात्।) कुठार:। इति भ्रव्हार्थेकल्पत्रः॥

हमक्मा:, पुं, (हमक्ति इमेग:।) हम-युक्ताहालिका। अहालिकोपरि ह्यानिसित-गृहम्। तत्पर्यायः। मयटः २। इति हारा-वली। २२३॥

हर्गाद्रिप:, पुं, (हर्गरूपीर दिपी हच: ।) मत्या-नकत्रणम्। इति राजनिषेग्टः॥

ल्लामिः, पुं.. (ल्लाजातीव्यः। आक्रमाधिववत् समास:।) ह्याजातायि:। तत्पर्याय:। वत्-सता: २। इति त्रिका अधिव: ॥

हवाझन:, पुं, (हबमिव बझनो च्येष्ठी। हजदराङ्गतित्वाद्ख तथात्वम्।) क्रवलायः। इति जिनाक ग्रेष:॥

हकार्य, की, (हकीइ चार्ट्य पुरुषात्।) पर्वत-त्रम्। इति राजनिषेग्टः॥

ल्याम्बं, की, (ल्बोयु अन्तम्।) लवगल्यम्। इति राजनिषेग्टः॥

हमजुटी, स्ती, (हमास्कादिता कुटी।) हमा- हममां:, पुं, (हमोष्ठ मिनः।) हमयाही। हमास्क, [ज्] पुं, (हमोषु असमिव रक्तवर्म-लात्।) व्यकुद्भम्। इति राजनिष्यः। हयोचु:, पुं, (हरोपु इच्चरिव।) वल्बना। इति राजनिर्घग्टः ॥

> हणोत्तमः, पुं, (हणेषु उत्तमः।) उखर्वनहबम्। इति राजनिर्घेग्टः॥

> हमीइनः, पुं, (हमें: यह उद्भवतीति। उत्+ भू + यच्।) नोवार:। इति राजनिर्धेष्ट:॥ हर्णीकः, [स्] ज्ञी, (हर्णनिर्मितमोनो वस्ति-

स्थानम ।) कायमानम् । टकानिमितग्रहम् । इति डेमचन्द्र:। ४। ६२॥ खड्या घर इति

एगीवधं, की, (लगासनं जीवधम्।) एल-वालुकाखगत्वद्रयम्। इति प्रव्हचित्रका॥

हराया, स्ती, (हरागां सम्बद्धः। "पाधादिभ्यो य:।" ४।२। ९६। इति य:।) त्यसमूहः। इत्यसरः। २।५।१६८॥

हतीयः, चि, (चयाणां पूर्यः। चि + "चे: सम्प-सारणच।"५।२।५५। इति तीयः सम्प-सारगच।) चयाणां पूरगः। इति वाकर-यम् ॥ तेसरा इत्यादि भाषा। (यथा, मतुः। २ । ३५ ।

"चूड़ाकर्म द्विजातीनां सबेंधामेन धर्मतः। प्रचमेग्ब्दे हतीये वा कर्मचं श्रुतिचोदनात् ॥") हतीयप्रकतिः, स्त्री, हतीया प्रकृतिः। इत्यमर-टीकायां भरतः॥

हतीया, स्त्री, (त्रयाणां पूरणी। वि+"ने: सम्प्रसारगच।" ५।२। ५५। इति तीय: सम्प्रसारणच। ततराप्।) तिथिविशेष:। चा चन्द्रमक्तलस्य हतीयकलाक्रियाक्तपा तत्-क्रियोपलिचतः कालो वा। इति तिथ्यादि-तत्वम्॥

ब्रस्थां नातस्य फर्नं यथा,— "सकलगुणगभौरो भूमिपालानुरागी पवनगर्विगाची सर्वलोकोपकारी। परविषयनिवासी कौतुकी सत्यवादी भवति निखिलविद्यो यस्तृतीयाप्रसतः ॥" इति कोष्ठीपदीप:॥

सा विशाखस्य मुका च्याचयहतीया। यथा, स्मृति:।

"वैशाखे मासि राजेन्द्र! युक्तपचे हतीयिका। व्यचया सा तिथि: प्रोत्ता क्तिकारोहियी-

तस्यां दानादिकं पुग्यं अचयं समुदान्नतम्॥" भविद्ये।

या श्रका कुरुशाईल ! वैशाखि मासि वै तिथि:। हतीया साचया लोके गीर्वासैरभिवस्ता ॥ योग्सां दहाति करकान् वारिवानसमन्वितान्। स याति पुरुषो वीर! लोकान् वे हममालिन: । करकान् कुम्भान्। वाजमनम्। हिममाजिनः

स्र्यस्य ॥ ब्रह्मपुरासे। "यः प्रश्नित हतीयायां कृषां चन्द्रमचितम्।